VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(07 April 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की श्रीलंका यात्रा का भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंधों के लिए महत्व
- 'स्टैगफ्लेशन (Stagflation)' क्या है, और यह अर्थव्यवस्था के लिए क्यों बुरा है?
- देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए सरकार की हालिया पहलें
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की श्रीलंका यात्रा का भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंधों के लिए महत्व:

परिचय:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने हालिया श्रीलंका दौरे में श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके के इस आश्वासन का स्वागत किया कि श्रीलंका "अपनी भूमि का इस्तेमाल भारत की सुरक्षा के लिए किसी भी तरह से नहीं होने देगा", और उन्होंने इस कदम को दोनों पड़ोसियों के बीच गहरे विश्वास की पुष्टि बताया।
- उल्लेखनीय है कि यह एक ऐसा बयान है जो दोनों पड़ोसियों पर चीन के बढ़ते प्रभाव के बारे में चिंताओं को दूर करने वाला प्रतीत होता है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस संबंध में कहा कि "तमिल संत तिरुवल्लुवर ने कहा था- दुश्मन के खिलाफ सच्चे दोस्त की ढाल और उसकी दोस्ती से बड़ी सुरक्षा और क्या हो सकती है?"
- प्रधानमंत्री मोदी ने आखिरी बार 2019 में श्रीलंका की यात्रा की थी और 2015 के बाद से यह श्रीलंका की उनकी चौथी यात्रा है।

दोनों देशों के मध्य महत्वपूर्ण रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर:

- श्रीलंका की प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा एक सद्भावनापूर्ण कदम से कहीं अधिक है - यह हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ते चीनी प्रभाव के समय दोनों देशों के बीच रक्षा और रणनीतिक सहयोग को गहरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- इस यात्रा के दौरान भारत और श्रीलंका के बीच एक अहम रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं, जो लगभग 35 साल, भारतीय शांति रक्षा सेना (IPKF) की वापसी, बाद दोनों देशों के सैन्य संबंधों में नया मोड़ लाता है।
- श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने आश्वासन दिया कि उनकी भूमि का इस्तेमाल भारत की सुरक्षा या क्षेत्रीय स्थिरता के खिलाफ नहीं होने दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति दिसानायके के इस आश्वासन को महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि भारत को चीनी अनुसंधान और निगरानी जहाजों की श्रीलंका यात्राओं, खासकर हंबनटोटा बंदरगाह पर, को लेकर चिंता है।
- प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत और श्रीलंका के 'साझा सुरक्षा हित' हैं और दोनों देश सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करेंगे। दोनों देशों ने 'कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन' और हिंद महासागर में संयुक्त सहयोग पर सहमति जताई है।

- इसके अतिरिक्त भारत श्रीलंका को हाइड्रोग्राफी, रक्षा मंच, समुद्री निगरानी, संयुक्त अभ्यास, और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग प्रदान करेगा।

श्रीलंका में चीन का बढ़ता प्रभाव:

- श्रीलंका की अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए वहां चीनी निवेश और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने भारत के सुरक्षा मुद्दों से लेकर कई तरह की चिंताएं पैदा की हैं।
- उल्लेखनीय है कि श्रीलंका सरकार द्वारा ऋण चुकौती में चूक के बाद 99 साल के पट्टे पर सुरक्षित हंबनटोटा बंदरगाह पर चीनी नियंत्रण ने युआन वांग 5 जैसे चीनी निगरानी जहाजों को भारत के दक्षिणी तट के पास संचालित करने में सक्षम बनाया है।
- 2022 में भारत के विरोध के बावजूद, श्रीलंका ने चीनी जहाजों को "पुनःपूर्ति" के लिए हंबनटोटा में डॉक करने की अनुमति दी, जो एक प्रथा बन गई है, वह अब भी जो जारी है।
- राष्ट्रपति दिसानायके की हाल ही में चीन यात्रा के बाद चीन ने श्रीलंका में रिकॉर्ड 3.7 अरब डॉलर का निवेश करने का भी वादा किया है। इस धन का उपयोग उन्नत बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) समझौते के हिस्से के रूप में हंबनटोटा में एक नई तेल रिफाइनरी बनाने के लिए किया जाएगा।

श्रीलंका में नृजातीय तमिलों का मुद्दा:

- प्रधानमंत्री के इस यात्रा के दौरान श्रीलंका के तमिल अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर भारत ने बल दिया।
- भारत ने श्रीलंका के नेताओं से तमिल अल्पसंख्यकों के अधिकारों और आकांक्षाओं को सम्मान देने की अपील की है। इसमें प्रांतीय परिषद चुनाव कराना और संवैधानिक प्रावधानों को पूरी तरह लागू करना शामिल है।
- उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी ने श्रीलंका में "पुनर्निर्माण और सुलह" पर चर्चा की और उम्मीद जताई कि श्रीलंका सरकार तमिल समुदाय के लिए समावेशी दृष्टिकोण अपनाएगी। वहीं, राष्ट्रपति दिसानायके ने प्रधानमंत्री मोदी को अपनी समावेशी नीति की जानकारी दी और संविधान के पूर्ण पालन की प्रतिबद्धता दोहराई।
- कुल मिलाकर, भारत चाहता है कि श्रीलंका अपने तमिल नागरिकों को न्याय और राजनीतिक भागीदारी प्रदान करे।

भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय संबंध:

- भारत श्रीलंका का सबसे करीबी पड़ोसी है और दोनों देशों के बीच संबंध 2,500 साल से भी ज्यादा पुराने हैं, जो एक मजबूत सभ्यतागत और ऐतिहासिक जुड़ाव

साझा करते हैं। भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति और 'महासागर (MAHASAGAR: Mutual and Holistic Advancement for Security and Growth Across Regions)' विज़न में श्रीलंका का केंद्रीय स्थान है।

- दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंध परिपक्व और विविधतापूर्ण हैं, जो समकालीन प्रासंगिकता के सभी क्षेत्रों को शामिल करते हैं। दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत और उनके नागरिकों के बीच व्यापक लोगों से लोगों का संपर्क एक बहुआयामी साझेदारी बनाने का आधार प्रदान करता है।

विकास सहयोग:

- श्रीलंका के साथ भारत का विकास सहयोग दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक है। भारत द्वारा श्रीलंका को दी जाने वाली कुल ऋण सहायता 7 अरब डॉलर से अधिक है, जिसमें रियायती ऋण, भुगतान स्थगन और स्वैप समझौते शामिल हैं। श्रीलंका को भारत की अनुदान सहायता वर्तमान में लगभग 780 मिलियन अमेरिकी डॉलर है।
- विकासात्मक सहायता के अलावा, भारत ने 2022 में आर्थिक संकट के दौरान श्रीलंका को लगभग 4 अरब डॉलर की बहुआयामी सहायता प्रदान की है।

भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय व्यापार और वाणिज्य संबंध:

- भारत पारंपरिक रूप से श्रीलंका के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। वित्त वर्ष 2023-24 में भारत और श्रीलंका के बीच व्यापारिक व्यापार 5.54 अरब डॉलर रहा, जिसमें भारत का निर्यात 4.11 अरब डॉलर और श्रीलंका का निर्यात 1.42 अरब डॉलर रहा। चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अप्रैल-नवंबर की अवधि के लिए द्विपक्षीय व्यापार 3.67 अरब डॉलर है, जिसमें भारत का श्रीलंका को निर्यात 2.84 अरब डॉलर है।
- भारत 2023 तक 2.25 अरब डॉलर के संचयी निवेश के साथ श्रीलंका में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, जिसमें अकेले 2023 में 198.1 मिलियन डॉलर का निवेश है। भारत से मुख्य निवेश ऊर्जा, आतिथ्य, रियल एस्टेट, विनिर्माण, दूरसंचार, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के क्षेत्रों में हैं।

'जया श्री महा बोधि वृक्ष' और ऐतिहासिक शहर 'अनुराधापुरा':

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका की अपनी यात्रा के दौरान ऐतिहासिक शहर अनुराधापुरा में 'जया श्री महा बोधि वृक्ष' का दौरा किया। उल्लेखनीय है कि 'जया श्री महा बोधि वृक्ष' को दुनिया का सबसे पुराना जीवित पौधा माना जाता है, और

ऐसा माना जाता है कि यह एक शाखा से उगा है जिसे एक भारतीय राजकुमारी श्रीलंका ले गई थी।

- माना जाता है कि यह बो (फिकस रिलिजिओसा या पीपल) वृक्ष बोधगया के उस वृक्ष की शाखा से उगा है जिसके नीचे गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस शाखा को संघमित्रा (या संघमित्रा) द्वारा श्रीलंका ले जाया गया था, जो मौर्य राजा अशोक की बेटी और बौद्ध भिक्षुणी थीं।
- प्राचीन शहर अनुराधापुरा में अन्य बौद्ध मंदिरों के साथ यह वृक्ष बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थल है। अनुराधापुरा अब यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।

प्रधानमंत्री को 'श्रीलंका मित्र विभूषण' से सम्मानित किया गया:

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके द्वारा श्रीलंका के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'श्रीलंका मित्र विभूषण' से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री ने यह पुरस्कार 1.4 अरब देशवासियों और भारत और श्रीलंका के बीच "गहरी मित्रता" को समर्पित किया।

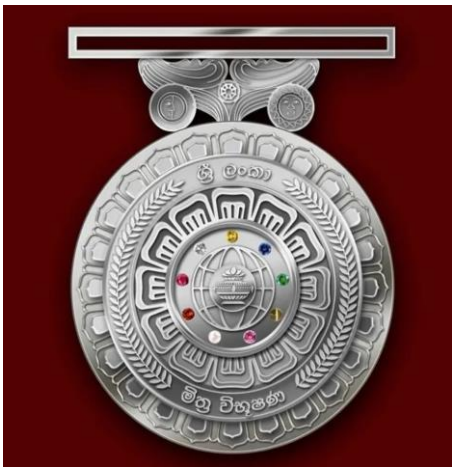

- 'श्रीलंका मित्र विभूषण 'उन राष्ट्राध्यक्षों और सरकार प्रमुखों को सम्मानित करता है जिनके साथ श्रीलंका के सौहार्दपूर्ण संबंध हैं।
- उल्लेखनीय है की 2008 में तत्कालीन राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे द्वारा स्थापित यह पुरस्कार, विदेशियों को दिए जाने वाले पुरस्कारों में सबसे प्रमुख है। 2014 की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह पुरस्कार श्रीलंका द्वारा दिए जाने वाले राष्ट्रीय सम्मानों से भी ऊपर है, जिसमें श्रीलंका रत्न (भारत रत्न के बराबर) शामिल है।

भारतीय शांति सेना (IPKF):

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलंबो में भारतीय शांति सेना (IPKF) स्मारक जाकर शहीद भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। यह स्मारक लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे) के खिलाफ अभियान में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की याद में बनाया गया था। IPKF स्मारक पर 1987 से 1990 के बीच शहीद हुए 1200 सैनिकों के नाम काले संगमरमर पर अंकित हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- उल्लेखनीय है कि भारतीय शांति सेना (IPKF) 1987 और 1990 के बीच श्रीलंका में शांति अभियान चलाने वाली भारतीय सैन्य टुकड़ी थी। इसका गठन 1987 के भारत-श्रीलंका शांति समझौते के तहत किया गया था जिसका उद्देश्य श्रीलंकाई तमिल आतंकवादी समूहों और श्रीलंकाई सेना के बीच गृह युद्ध को समाप्त करना था। आईपीकेएफ का मुख्य कार्य विभिन्न उग्रवादी समूहों को निरस्त्र करना था।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

'स्टैगफ्लेशन (Stagflation)' क्या है, और यह अर्थव्यवस्था के लिए क्यों बुरा है?

चर्चा में क्यों है?

- अमेरिकी फेडरल रिजर्व के चेयरमैन जेरोम पॉवेल ने 5 अप्रैल को चिंता जताई कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के "लिबरेशन डे" टैरिफ से अमेरिका में 'स्टैगफ्लेशन' की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- वर्जीनिया में एक व्यापार सम्मेलन को संबोधित करते हुए फेड चेयरमैन पॉवेल ने कहा कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए दृष्टिकोण अभी भी अत्यधिक अनिश्चित बना हुआ है, जिसमें "उच्च बेरोजगारी और उच्च मुद्रास्फीति दोनों के जोखिम (स्टैगफ्लेशन) बढ़ गए हैं"।

स्टैगफ्लेशन क्या होता है?

- स्टैगफ्लेशन एक ऐसी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है, जिसमें धीमी विकास दर , उच्च बेरोजगारी दर और मुद्रास्फीति या महंगाई एक ही समय में होती हैं।

- इससे नीति निर्माताओं के लिए समस्या का समाधान खोजना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि एक समस्या को ठीक करने से दूसरी समस्या और भी बदतर हो सकती है। उदाहरण के लिए, मुद्रास्फीति को कम करने की कोशिश से बेरोजगारी बढ़ सकती है, जबकि नौकरी की वृद्धि को बढ़ावा देने के प्रयासों से मुद्रास्फीति बढ़ सकती है।

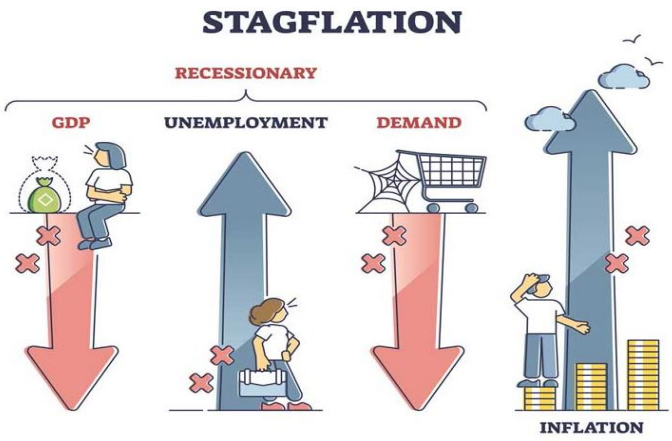

- उल्लेखनीय है कि स्टैगफ्लेशन अक्सर आपूर्ति पक्ष (Supply Side) के झटकों से उत्पन्न होता है, जैसे तेल की कीमतों में अचानक वृद्धि, जो उत्पादन लागत और मुद्रास्फीति को बढ़ाती है जबकि समग्र आर्थिक प्रदर्शन को नुकसान पहुंचाती है। इसके परिणामस्वरूप कीमतों में तेजी से वृद्धि और धीमी आर्थिक गतिविधि होती है, जिससे जीवन स्तर में गिरावट और अधिक आर्थिक अनिश्चितता होती है।

स्टैगफ्लेशन बनाम मुद्रास्फीति:

- उल्लेखनीय है कि स्टैगफ्लेशन और मुद्रास्फीति दोनों ही आर्थिक घटनाएँ हैं जिनका अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है, लेकिन वे मुख्य पहलुओं में भिन्न हैं।

- **मुद्रास्फीति (Inflation):** एक अर्थव्यवस्था में समय की अवधि में कीमतों में होने वाली सामान्य वृद्धि है। यह अक्सर मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि के कारण होता है, जिससे मुद्रा की क्रय शक्ति में कमी आती है।
- **स्टैगफ्लेशन (Stagflation):** एक ऐसी स्थिति है जहाँ मुद्रास्फीति अधिक होती है, लेकिन आर्थिक विकास स्थिर या घट रहा होता है। उच्च मुद्रास्फीति और कम विकास का यह संयोजन नीति निर्माताओं के लिए प्रबंधन हेतु एक चुनौतीपूर्ण परिदृश्य प्रस्तुत करता है।

अर्थव्यवस्था में स्टैगफ्लेशन की स्थिति क्यों उत्पन्न होती है?

- **आपूर्ति पक्ष की चुनौती:** इसका एक मुख्य कारण उत्पादन लागत में अचानक वृद्धि जैसे आपूर्ति पक्ष की चुनौती से है, जैसे तेल की कीमतों में उछाल। उल्लेखनीय है कि ओपेक द्वारा 1973 में तेल प्रतिबंध के कारण तेल की कीमतें आसमान छू गईं, जिससे कई उद्योगों के लिए परिवहन और उत्पादन लागत बढ़ गई। इससे कीमतें बढ़ गईं (Inflation), जबकि नौकरी छूट गई और आर्थिक उत्पादन कम हो गया (Stagnation)।
- **खराब आर्थिक नीतियाँ:** एक अन्य विचार यह है कि खराब आर्थिक नीतियाँ मुद्रास्फीति को बढ़ावा दे सकती हैं। उदाहरण के लिए, बहुत अधिक विनियमन या

बाजार हस्तक्षेप उत्पादकता को नुकसान पहुँचा सकता है, जबकि मुद्रा की आपूर्ति में बहुत तेज़ी से वृद्धि हो सकती है, जिससे वास्तविक आर्थिक विकास के बिना मुद्रास्फीति हो सकती है।

- **लगातार मुद्रास्फीति:** अर्थशास्त्रियों ने देखा है कि मंदी के दौरान, उपभोक्ता कीमतें अक्सर बढ़ती रहती हैं। यह पहले के विचारों के विपरीत है कि मंदी की वजह से कीमतें गिरती हैं और यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के न बढ़ने पर भी मुद्रास्फीति जारी रह सकती है।

स्टैगफ्लेशन से जुड़ा ऐतिहासिक विकासक्रम:

ऐतिहासिक संदर्भ:

- उल्लेखनीय है कि "स्टैगफ्लेशन" शब्द का पहली बार इस्तेमाल ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इयान मैकलियोड ने 1965 में ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स में भाषण के दौरान किया था। उन्होंने इसका इस्तेमाल उस समय यूनाइटेड किंगडम में मुश्किल आर्थिक स्थिति को समझाने के लिए किया था। हालांकि, स्टैगफ्लेशन 1970 के दशक के तेल संकट के दौरान प्रसिद्ध हुआ।

परंपरागत आर्थिक नीतियों की अप्रभाविता:

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की आर्थिक सोच पर हावी होने वाली कीनेसियन आर्थिक नीतियाँ स्टैगफ्लेशन से निपटने में अप्रभावी साबित हुईं। मौद्रिक और राजकोषीय नीति जैसे पारंपरिक साधनों को मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दोनों को एक साथ संबोधित करने में सीमाओं का सामना करना पड़ा।
- स्टैगफ्लेशन ने आर्थिक सिद्धांतों के पुनर्मूल्यांकन को प्रेरित किया, जिससे मौद्रिकवाद और आपूर्ति-पक्ष अर्थशास्त्र जैसे नए विचारधाराओं का उदय हुआ।

आर्थिक नीति-निर्माण पर दीर्घकालिक प्रभाव:

- स्टैगफ्लेशन ने आर्थिक नीति निर्माण पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा, जिससे मूल्य स्थिरता और आपूर्ति-पक्ष सुधारों पर अधिक जोर दिया गया।
- 1970 के दशक के अनुभव ने एक चेतावनी के रूप में काम किया, जिसमें मुद्रास्फीति के दबावों के खतरों और दीर्घकालिक विकास को बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधारों के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

स्टैगफ्लेशन का अर्थव्यवस्था पर क्या दुष्प्रभाव होता है?

- स्टैगफ्लेशन एक ऐसी आर्थिक स्थिति है जो पारंपरिक आर्थिक सिद्धांतों को चुनौती देती है, विशेषकर 'फिलिप्स वक्र' को, जो यह मानता है कि मुद्रास्फीति

और बेरोजगारी के बीच विपरीत संबंध होता है। लेकिन स्टैगफ्लेशन में ये मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दोनों एक साथ बढ़ते हैं, जिससे नीति निर्माताओं के सामने एक जटिल दुविधा खड़ी हो जाती है।

- इस स्थिति में बढ़ती कीमतें लोगों की वास्तविक आय को कम कर देती हैं, जिससे उनकी क्रय शक्ति घटती है और वे कम खर्च करते हैं। इसका सीधा असर पूरे देश की आर्थिक गतिविधियों में मंदी के रूप में दिखाई देता है।
- वहीं, व्यवसायों के लिए भी यह समय चुनौतीपूर्ण होता है। एक ओर उन्हें कच्चे माल और उत्पादन की बढ़ती लागत का सामना करना पड़ता है, और दूसरी ओर मांग में गिरावट से उन्हें अपने मुनाफे और निवेश की योजनाओं को रोकना पड़ता है।
- स्टैगफ्लेशन का एक गंभीर सामाजिक प्रभाव यह है कि यह आय असमानता को और बढ़ा देता है। बढ़ती महंगाई निम्न-आय वाले वर्गों को सबसे अधिक प्रभावित करती है क्योंकि उनकी अधिकांश आय आवश्यक वस्तुओं पर खर्च होती है। साथ ही, बढ़ती बेरोजगारी से रोजगार के अवसर और कमाई की संभावना भी घट जाती है।

स्टैगफ्लेशन की चुनौती से कैसे निपटा जा सकता है?

- उल्लेखनीय है कि स्टैगफ्लेशन चुनौतियों का एक जटिल समूह प्रस्तुत करती है जिसके लिए अर्थव्यवस्था को स्थिर करने, विश्वास बहाल करने और मुद्रास्फीति के

दबावों का प्रबंधन करते हुए सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए एक सूक्ष्म और बहुआयामी नीति दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

मौद्रिक नीति उपाय:

- केंद्रीय बैंक ब्याज दरों को समायोजित करके और मात्रात्मक सहजता जैसे अपरंपरागत मौद्रिक उपकरणों को लागू करके स्टैगफ्लेशन का मुकाबला कर सकते हैं। ब्याज दरों को कम करके, केंद्रीय बैंक आर्थिक गतिविधि को प्रोत्साहित कर सकते हैं और बेरोजगारी को कम कर सकते हैं।
- हालांकि, अगर सावधानी से प्रबंधित नहीं किया जाता है तो यह दृष्टिकोण मुद्रास्फीति को बढ़ा सकता है।

राजकोषीय नीति:

- सरकारें बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और सामाजिक कार्यक्रमों पर सरकारी खर्च बढ़ाकर कुल मांग को प्रोत्साहित करने के लिए राजकोषीय नीति का उपयोग कर सकती हैं।
- अर्थव्यवस्था में मांग को बढ़ावा देकर, राजकोषीय प्रोत्साहन बेरोजगारी को कम करने और मुद्रास्फीति को धीमा करने में मदद कर सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

आपूर्ति-पक्ष नीतियाँ:

- अर्थव्यवस्था के आपूर्ति पक्ष को बेहतर बनाने के उद्देश्य से किए गए संरचनात्मक सुधार, दीर्घावधि में मुद्रास्फीति को कम करने में मदद कर सकते हैं। इन नीतियों में विनियमन, कर कटौती, श्रम बाजार सुधार और शिक्षा और नवाचार में निवेश शामिल हैं। उत्पादकता और दक्षता को बढ़ाकर, आपूर्ति-पक्ष नीतियाँ कीमतों को कम करने और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकती हैं।

लागत-प्रेरित उपाय:

- नीति निर्माता लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति के मूल कारणों, जैसे कि बढ़ती वस्तु की कीमतें और मजदूरी के दबाव को दूर करने के लिए उपायों को लागू कर सकते हैं। इसमें सब्सिडी, मूल्य नियंत्रण या मजदूरी वृद्धि को कम करने के लिए श्रमिक संघों के साथ बातचीत शामिल हो सकती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए सरकार की हालिया पहलें:

परिचय:

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 5 अप्रैल को 'उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (DPIIT)' के अंतर्गत एक समर्पित 'स्टार्टअप इंडिया डेस्क' की स्थापना की घोषणा की, जो पूरे भारत में उभरते उद्यमियों के लिए हेल्पलाइन के रूप में काम करेगा।
- इसके साथ 10,000 करोड़ रुपये के कोष के साथ स्टार्टअप्स के लिए दूसरे 'फंड ऑफ फंड्स (FFS)' को मंजूरी दे दी गई है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम में डिपटेक को बढ़ावा देने को लेकर बहस:

- उल्लेखनीय है कि वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल द्वारा यह घोषणा उनके द्वारा भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम पर दिए गए बयान के बाद आई है, जिसने उद्यमिता, नवचार और डिपटेक को बढ़ावा देने पर बहस को हवा दे दी है।

- वाणिज्य मंत्री गोयल ने स्टार्टअप महाकुंभ में इस क्षेत्र की तीखी आलोचना की थी, उन्होंने स्टार्टअप से "डिलीवरी बॉयज और गर्ल्स" से ध्यान हटाकर सेमीकंडक्टर, रोबोटिक्स और एआई जैसे उच्च तकनीक वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया था।
- उसी स्टार्टअप महाकुंभ कार्यक्रम में, G20 शेरपा अमिताभ कांत ने भी भारत को "तकनीकी उपनिवेश" बनने के खिलाफ चेतावनी दी और संप्रभुता की रक्षा के लिए नवाचार में निवेश करने की आवश्यकता पर बल दिया।

'स्टार्टअप इंडिया डेस्क' की स्थापना:

- 'स्टार्टअप इंडिया डेस्क' को क्षेत्रीय भाषाओं में एक साधारण चार अंकों के टोल-फ्री नंबर के माध्यम से एक्सेस किया जा सकेगा, जिससे संसाधनों और मार्गदर्शन तक आसान पहुँच होगी।
- यह हेल्पलाइन नवोदित उद्यमियों के लिए चिंताओं को व्यक्त करने, पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार का सुझाव देने और उनके सामने आने वाली किसी भी चुनौती को चिह्नित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण होगा।

स्टार्टअप के लिए दूसरा फंड ऑफ फंड (FFS):

- स्टार्टअप इंडिया डेस्क के अलावा, वाणिज्य मंत्री गोयल ने देश में नवाचार इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप के लिए 'दूसरे फंड ऑफ फंड (FFS)' को मंजूरी देने की भी घोषणा की, जिसमें 10,000 करोड़ रुपये का कोष होगा।
- इस वर्ष, पहली किस्त के रूप में 2,000 करोड़ रुपये भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) को वितरित किए जाएंगे।
- इस फंड का एक महत्वपूर्ण हिस्सा छोटे स्टार्टअप के सीड फंडिंग और उभरती प्रौद्योगिकियों में नवाचार का समर्थन करने के लिए आरक्षित किया जाएगा।

डीप-टेक स्टार्टअप को बढ़ावा देना:

- उल्लेखनीय है कि यह फंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), रोबोटिक्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, मशीन लर्निंग, प्रिसिजन मैन्युफैक्चरिंग, बायोटेक और सेमीकंडक्टर डिजाइन जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों पर केंद्रित स्टार्टअप को प्राथमिकता देगा।
- इस फंड के माध्यम से, सरकार का लक्ष्य शुरुआती चरण में ही वित्तीय सहायता प्रदान करके डीप-टेक स्टार्टअप के विकास को बढ़ावा देना है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां उच्च पूंजी आवश्यकताओं और लंबी अवधि की लाभप्रदता अवधि का सामना करना पड़ता है।

- उल्लेखनीय है कि पारंपरिक फंडिंग स्रोत अक्सर ऐसे उच्च जोखिम वाले उपक्रमों को नजरअंदाज कर देते हैं, जो भारत के वैश्विक नवाचार लक्ष्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उद्यमियों के लिए बुनियादी ढांचा समर्थन:

- वाणिज्य मंत्री गोयल ने, शुरुआती चरण के उद्यमियों को और अधिक सहायता देने के लिए, सिडबी से हर राज्य में कम से कम एक सहायता केंद्र स्थापित करने का आग्रह किया, जो इन उद्यमियों को आवश्यक बुनियादी ढांचा और साझा सुविधाएँ प्रदान करे। इससे उद्यमियों को बुनियादी सेवाओं और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए एक सहयोगी स्थान तक पहुँच प्राप्त करने में मदद मिलेगी।
- उन्होंने नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण सृजित करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्रत्येक उभरते उद्यमी को अपने उद्यम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे तक पहुंच प्राप्त हो"।

'स्टार्टअप इंडिया' कार्यक्रम क्या है?

- 'स्टार्टअप इंडिया' भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देना और भारत में नवाचार और उद्यमिता के लिए एक मजबूत और समावेशी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।

- 16 जनवरी, 2016 को इस पहल के शुभारंभ के बाद से, स्टार्टअप इंडिया ने उद्यमियों का समर्थन करने और भारत को नौकरी चाहने वालों के बजाय नौकरी देने वालों के देश में बदलने के उद्देश्य से कई कार्यक्रम शुरू किए हैं।
- इसके तहत 19-सूत्री कार्य योजना में स्टार्टअप के लिए निम्नलिखित प्रकार के समर्थन की परिकल्पना की गई है:
  - ➢ इन्क्यूबेशन केंद्रों सहित उन्नत बुनियादी ढांचा
  - ➢ आसान पेटेंट फाइलिंग सहित आसान आईपीआर सुविधाकर लाभ, आसान अनुपालन, कंपनी स्थापित करने का बेहतर तरीका, तेजी से निकास तंत्र और अधिक सहित बेहतर विनियामक वातावरण
  - ➢ सिडबी द्वारा प्रबंधित 10,000 करोड़ रुपये के फंड ऑफ फंड्स के रूप में आर्थिक प्रोत्साहन, जिसका लक्ष्य वित्तपोषण के अवसरों में वृद्धि करना है।
  - ➢ स्टार्टअप इंडिया पोर्टल की स्थापना -
  - ➢ स्टार्टअप्स के लिए एक टोल-फ्री हेल्पलाइन और त्वरित ईमेल प्रश्न समाधान

MCQs

1. चर्चा में रहे 'जया श्री महा बोधि वृक्ष' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. इसको दुनिया का सबसे पुराना जीवित रोपित पौधा माना जाता है।

   2. यह वृक्ष बोधगया के वर्तमान 'बोधि वृक्ष' की एक शाखा से उगा है।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

   Ans:(a)

2. हाल ही में चर्चा में रहे 'भारतीय शांति सेना (IPKF)' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

   (a) यह 90 के दशक में श्रीलंका में शांति अभियान चलाने वाली भारतीय सैन्य टुकड़ी थी।

   (b) इसका गठन 1987 के भारत-श्रीलंका शांति समझौते के तहत किया गया था।

   (c) इसका उद्देश्य लिट्टे और श्रीलंकाई सेना के बीच गृह युद्ध को समाप्त करना था।

   (d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

   Ans:(d)

3. हाल ही में चर्चा में रहे 'स्टैगफ्लेशन' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह एक ऐसी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है, जिसमें धीमी विकास दर, कम मुद्रास्फीति दर और उच्च बेरोजगारी दर होती हैं।

2. स्टैगफ्लेशन अक्सर आपूर्ति पक्ष के झटकों से उत्पन्न होता है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

(a)केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(b)

4. हाल ही में चर्चा में रहे 'स्टार्टअप इंडिया डेस्क' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) इस हेल्पलाइन को क्षेत्रीय भाषाओं में एक टोल-फ्री नंबर के माध्यम से एक्सेस किया जा सकेगा।

(b) यह हेल्पलाइन नवोदित उद्यमियों के लिए चिंताओं को व्यक्त करने, पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार का सुझाव देने का विकल्प देगा।

(c) इसकी स्थापना 'उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग' के अंतर्गत किया जायेगा।

(d) उपर्युक्त सभी सही कथन हैं।

Ans:(d)

5. चर्चा में रहे 'भारत और श्रीलंका के बीच संबंधों की वर्तमान स्थिति' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. श्रीलंका भारत की 'पड़ोस पहले नीति' और 'महासागर' पहल दोनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण सहयोगी देश है।
2. हिंद महासागर में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ाने के चीन के प्रयासों से उत्पन्न सुरक्षा चिंताओं के बीच भी श्रीलंका का भारत लिए महत्व है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(c)